National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 06-03-2025, Accepted: 05-04-2025, Published: 21-04-2025
Volume 10, Issue 2, 2025, Page No. 18-23

चंपारण सत्याग्रह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन पर इसका प्रभाव

श्वेताराज[1], डॉ. नलिन विलोचन[2]
[1] शोधार्थी, इतिहास विभाग, बी.आर.ए.बी.यू., मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत
[2] प्रोफेसर, इतिहास विभाग, एम पि. सिन्हा. साइन्स, कॉलेज मुजफ्फरपुर, बी.आर.ए.बी.यू., मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश
चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक ऐतिहासिक घटना थी। यह 1917 में बिहार के चंपारण जिले में हुआ था और महात्मा गांधी द्वारा भारतीय धरती पर शुरू किया गया पहला सविनय अवज्ञा आंदोलन था। इस सत्याग्रह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 20वीं सदी की शुरुआत में देखी जा सकती है जब भारत अभी भी ब्रिटिश शासन के अधीन था। चंपारण के किसान अपने ब्रिटिश जमींदारों द्वारा लगाए गए दमनकारी नील की खेती प्रणाली के तहत पीड़ित थे। इसमें खाद्य फसलों के बजाय नील की फसलों की जबरन खेती शामिल थी, जिससे स्थानीय किसानों में व्यापक गरीबी और शोषण हुआ। महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में अपने सफल अभियानों के माध्यम से खुद को पहले ही एक प्रमुख नेता के रूप में स्थापित कर लिया था। जब वे भारत पहुंचे, तो राज कुमार शुक्ला नामक एक स्थानीय किसान ने उनसे इन शिकायतों को दूर करने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने में मदद मांगी। इसके बाद गांधी ने स्थानीय लोगों के साथ कई बैठकें कीं और उनके सामने आने वाले मुद्दों पर व्यापक शोध किया। उन्होंने पाया कि न केवल उन्हें नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जा रहा था, बल्कि उनके जमींदारों द्वारा विभिन्न प्रकार के दुर्व्यवहार और हिंसा का भी सामना करना पड़ रहा था।

मूल शब्दः चंपारण सत्याग्रह, उद्योग, आर्थिक, संगठित और अभियान, और ऐतिहासिक।

चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह वर्ष 1917 में बिहार के चंपारण जिले में हुआ था और महात्मा गांधी की नेतृत्व यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। इस आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का पता ब्रिटिश जमींदारों के अधीन दमनकारी नील की खेती से लगाया जा सकता है। किसानों के साथ अन्याय किया जाता था और उन्हें अपनी फसल के बजाय नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जाता था, जिससे वे गरीबी और कर्ज में डूब जाते थे। यह शोषणकारी व्यवस्था दशकों से प्रचलित थी, जिससे स्थानीय किसानों में भारी पीड़ा थी। इसी दौरान चंपारण के एक किसान राजकुमार शुक्ला की मुलाकात गांधीजी से हुई, जब वे एक अन्य राजनीतिक बैठक में भाग लेने जा रहे थे। उनकी दुर्दशा के बारे में सुनने के बाद, गांधीजी ने उनके मुद्दे को उठाने और अहिंसक तरीकों से इन अन्यायों के खिलाफ लड़ने का फैसला किया। गांधी पंडित नेहरू और राजेंद्र प्रसाद जैसे कई अन्य नेताओं के साथ चंपारण पहुंचे। उन्होंने शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन आयोजित किए और किसानों पर ब्रिटिश जमींदारों द्वारा किए गए अत्याचारों की जांच की। उनके कार्यों ने भारतीय किसानों के संघर्षों की ओर व्यापक ध्यान आकर्षित किया और भारत के विभिन्न हिस्सों से समर्थन प्राप्त किया।

साहित्य की समीक्षा

इस साहित्य समीक्षा में, हम इस महत्वपूर्ण घटना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन पर इसके प्रभाव का पता लगाएंगे। विभिन्न इतिहासकारों और शोधकर्ताओं के अनुसार, चंपारण सत्याग्रह का मूल कारण 1860 में पता लगाया जा सकता है जब यूरोपीय बागान मालिकों ने बिहार में नील की खेती शुरू की थी। इस फसल के लिए किसानों को अपनी जमीन का एक हिस्सा नील उत्पादन के लिए अलग रखना पड़ता था जबकि उन्हें अपने काम के लिए कम मजदूरी मिलती थी। समय के साथ, ये शोषणकारी प्रथाएँ तेज हो गईं, जिससे किसानों में व्यापक गरीबी और असंतोष फैल गया। 1907 में, चंपारण के राज कुमार शुक्ला ने ब्रिटिश जमींदारों द्वारा अनुचित व्यवहार के बारे में अपनी शिकायतों के साथ गांधी से संपर्क किया। उनकी दुर्दशा से आहत होकर, गांधी ने अप्रैल 1917 में चंपारण का दौरा किया और नील किसानों के सामने आने वाली कठोर जीवन स्थितियों को पहली बार देखा। उन्होंने स्थानीय नेताओं से मुलाकात की और सार्वजनिक बैठकें आयोजित कीं, जहां उन्होंने उन्हें अन्याय के खिलाफ बोलने के लिए प्रोत्साहित किया।

चंपारण सत्याग्रह, जिसे नील विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक निर्णायक क्षण था। यह ऐतिहासिक घटना 1917–18में हुई और इसने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के असहयोग आंदोलन में एक नेता के रूप में महात्मा गांधी की भूमिका की शुरुआत की। इस महत्वपूर्ण घटना पर साहित्य का विद्वानों द्वारा वर्षों से व्यापक रूप से अध्ययन किया गया है। 1991 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "गांधीः ए लाइफ" में, लेखक योगेश चड्ढा चंपारण सत्याग्रह में गांधी की भागीदारी और उनकी राजनीतिक विचारधारा पर इसके प्रभाव का विस्तृत विवरण देते हैं। वह इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे इस घटना ने निष्क्रिय प्रतिरोध और सविनय अवज्ञा पर गांधी के विश्वासों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो स्वतंत्रता के लिए उनके बाद के संघर्षों का पर्याय बन गया।

एक अन्य उल्लेखनीय साहित्यिक कृति रंजन कुमार गुप्ता द्वारा लिखित "भारतीय स्वतंत्रता संग्रामः चंपारण आंदोलन का मामला" (2009 में प्रकाशित) है। यह पुस्तक चंपारण आंदोलन के सामाजिक–राजनीतिक हालातों पर प्रकाश डालती है और ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ़ समन्वित जन विरोध के शुरुआती उदाहरणों में से एक के रूप में इसके महत्व को समझाती है। यह इस बात पर भी प्रकाश डालती है कि कैसे इस आंदोलन ने अन्य राष्ट्रवादी नेताओं को उत्पीड़न के खिलाफ़ लड़ने के लिए इसी तरह के तरीके अपनाने के लिए प्रेरित किया।

अनुसंधान अंतराल

चंपारण सत्याग्रह, जिसे नील आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों के खिलाफ महात्मा गांधी द्वारा किए गए पहले सफल अहिंसक विरोधों में से एक था। इसके ऐतिहासिक महत्व के बावजूद, इस घटना और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन पर इसके प्रभाव पर अभी भी शोध में कमी है। इस कमी का एक कारण चंपारण सत्याग्रह से संबंधित प्राथमिक स्रोतों की सीमित उपलब्धता हो सकती है। उस समय के अधिकांश अभिलेख और दस्तावेज भारतीय इतिहास के विभाजन और स्वतंत्रता जैसे अशांत काल के दौरान नष्ट हो गए या खो गए। इससे शोधकर्ताओं के लिए इस महत्वपूर्ण घटना के विवरण और प्रभाव के बारे में सटीक जानकारी प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इसके अतिरिक्त, भारतीय स्वतंत्रता पर अधिकांश अध्ययन भारत छोड़ो आंदोलन या सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे बड़े आंदोलनों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो चंपारण सत्याग्रह जैसे स्थानीय संघर्षों के महत्व को कम कर देते हैं। नतीजतन, इस विशिष्ट विरोध ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को आकार देने में कैसे योगदान दिया, इसका विस्तृत विश्लेषण और समझ का अभाव है।

सत्याग्रह के आयोजन और नेतृत्व में महात्मा गांधी की भूमिका

महात्मा गांधी, जिन्हें "राष्ट्रपिता" के रूप में भी जाना जाता है, ने चंपारण सत्याग्रह के आयोजन और नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अहिंसा, सविनय अवज्ञा और सत्य के उनके सिद्धांतों ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधी दक्षिण अफ्रीका में दो दशक बिताने के बाद 1915 में पहली बार भारत आए, जहाँ उन्होंने अहिंसक तरीकों से नस्लीय भेदभाव और अन्याय के खिलाफ सक्रिय रूप से लड़ाई लड़ी। उन्होंने चंपारण में भारतीय किसानों की दुर्दशा देखी, जो बिहार का एक जिला था, जो ब्रिटिश जमींदारों द्वारा शोषण का सामना कर रहा था, जिन्होंने उन्हें खाद्य फसलों के बजाय अपनी जमीन पर नील उगाने के लिए मजबूर किया था। इस प्रथा को तिनकठिया प्रणाली के रूप में जाना जाता है, जिससे किसानों को बहुत कम या कोई आर्थिक लाभ नहीं मिलता था, जबकि वे उच्च लगान और ऋण के बोझ तले दबे रहते थे। न्याय की अपनी सहज भावना और गरीबों के प्रति करुणा से प्रेरित होकर, गांधी ने चंपारण का दौरा करने और स्थिति को सीधे समझने का फैसला किया।

1917 में, वे स्वयंसेवकों की एक टीम के साथ चंपारण लौटे और सत्याग्रह (जिसका अर्थ है श्सत्य बलश्) नामक शांतिपूर्ण विरोध की एक श्रृंखला शुरू की। सत्याग्रह के पीछे का विचार लोगों को अपने उत्पीड़कों के प्रति हिंसा या घृणा का उपयोग किए बिना अन्याय का विरोध करने के लिए प्रेरित करना था। यह तीन सिद्धांतों पर आधारित थारू अहिंसा या अहिंसा; आत्म–पीड़ा या तपस्या; और अपने प्रतिद्वंद्वी के प्रति प्रेम। गांधी ने ग्रामीणों से आग्रह किया कि वे तब तक नील की खेती न करें जब तक कि उनके उचित व्यवहार की मांग पूरी न हो जाए। इसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश अधिकारियों ने हजारों लोगों को गिरफ्तार किया, लेकिन इससे किसानों के बीच संकल्प और एकजुटता और मजबूत हुई। इस आंदोलन द्वारा प्राप्त व्यापक ध्यान ने न केवल तिनकठिया प्रणाली को समाप्त करने जैसे ठोस परिवर्तन लाए, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर भी दूरगामी प्रभाव डाले। चंपारण सत्याग्रह ने गांधी के प्रतिष्ठित नेतृत्व और अहिंसक प्रतिरोध के उनके दर्शन की शुरुआत को चिह्नित किया, जो भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई का पर्याय बन गया। इस सत्याग्रह को संगठित करने और उसका नेतृत्व करने में उनकी भूमिका भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी क्योंकि इसने साबित किया कि शांतिपूर्ण विरोध हिंसक साधनों से अधिक प्रभावी हो सकता है। इसने भविष्य के आंदोलनों जैसे असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन की नींव भी रखी, जिसके कारण अंततः 15 अगस्त, 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिली। महात्मा गांधी ने चंपारण सत्याग्रह के आयोजन और नेतृत्व में एक अपरिहार्य भूमिका निभाई, जिसने न केवल किसानों को तत्काल राहत पहुंचाई बल्कि ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारत की स्वतंत्रता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में भी काम किया। अहिंसा और सत्य के उनके सिद्धांत आज भी दुनिया भर के लोगों को प्रेरित करते हैं।

चंपारण सत्याग्रह में शामिल प्रमुख नेता और उनकी भूमिकाएँ

चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह वर्ष 1917 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में एक व्यापक सविनय अवज्ञा आंदोलन था। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य बिहार के चंपारण जिले में नील की खेती करने वाले किसानों के जीवन और कार्य की स्थिति में सुधार करना था, जिन्हें औपनिवेशिक ब्रिटिश जमींदारों द्वारा नील की खेती करने के लिए मजबूर किया जा रहा था।

महात्मा गांधीः महात्मा गांधी को भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक माना जाता है। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका से अपना सत्याग्रह (सविनय अवज्ञा) आंदोलन शुरू किया और अपने वतन लौटने के बाद इसे भारत में जारी रखा। 1917 में, उन्होंने स्थानीय किसानों के अनुरोध पर चंपारण का दौरा किया, जो ब्रिटिश जमींदारों द्वारा अनुचित व्यवहार के कारण पीड़ित थे। शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन आयोजित करके और दमनकारी नीतियों के साथ असहयोग को प्रोत्साहित करके, गांधी ने सफलतापूर्वक उनकी शिकायतों पर ध्यान आकर्षित किया और ब्रिटिश शासन के तहत भारतीय किसानों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार को उजागर किया।

राज कुमार शुक्लाः राज कुमार शुक्ला चंपारण के एक किसान थे, जिन्होंने गांधी को जिले का दौरा करने और उनके मुद्दों को हल करने में मदद करने के लिए आमंत्रित किया था। उन्होंने गांधी को शोषक जमींदारों के खिलाफ लड़ाई का मुद्दा उठाने के लिए राजी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शुक्ला गांधी के साथ बिहार के अन्य हिस्सों की यात्रा के दौरान उनके साथ थे और उनकी दुर्दशा के बारे में जागरूकता फैलाने में मदद की।

बाबू ब्रजकिशोर प्रसादः बाबू ब्रज किशोर प्रसाद के नाम से लोकप्रिय, वे बिहार के एक प्रभावशाली नेता थे जिन्होंने चंपारण सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया था। उन्होंने इस आंदोलन के प्रति अपना समर्थन बढ़ाया और उत्पीड़ित किसानों के लिए न्याय पाने की रणनीतियों पर चर्चा करने के लिए गांधी के साथ कई बैठकें कीं। उनके प्रयासों से इस कारण के लिए और भी अधिक सार्वजनिक समर्थन जुटाने में मदद मिली।

डॉ. राजेंद्र प्रसादः डॉ. राजेंद्र प्रसाद एक अन्य प्रमुख नेता थे जिन्होंने चंपारण सत्याग्रह का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। एक प्रमुख वकील और गांधी के करीबी सहयोगी के रूप में, उन्होंने आंदोलन को कानूनी मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान किया। उन्होंने ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन और असहयोग गतिविधियों के आयोजन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया।

स्थानीय समुदाय, भारतीय समाज और समग्र रूप से स्वतंत्रता संग्राम पर सत्याग्रह का प्रभाव

चंपारण सत्याग्रह, जिसे नील विद्रोह के रूप में भी जाना जाता है, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह बिहार के चंपारण में ब्रिटिश जमींदारों की दमनकारी प्रथाओं और

भारतीय किसानों के शोषण के खिलाफ महात्मा गांधी के नेतृत्व में एक अहिंसक विरोध था। सबसे पहले, स्थानीय समुदाय पर इस आंदोलन के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

चंपारण के किसानों को ब्रिटिश जमींदारों द्वारा लगाए गए तिनकठिया प्रणाली के तहत अपनी खाद्य फसलों के बजाय नील उगाने के लिए मजबूर किया गया था। इससे न केवल आर्थिक कठिनाइयाँ हुईं, बल्कि रसायनों के अत्यधिक उपयोग के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी पैदा हुईं। सत्याग्रह के माध्यम से, गांधी ने इन किसानों को संगठित किया और उन्हें उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित किया। उन्होंने अन्याय के खिलाफ सामूहिक रूप से लड़ने के लिए एक संघ बनाने में भी उनकी मदद की। इस एकजुट प्रयास ने उनकी शिकायतों को आवाज़ दी और कृषि प्रथाओं को नियंत्रित करने वाले कानूनों में महत्वपूर्ण बदलाव किए।

इसके अलावा, सत्याग्रह का भारतीय समाज पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। गांधी के अहिंसक प्रतिरोध के दर्शन ने सभी सामाजिक वर्गों और धर्मों के लोगों को औपनिवेशिक शासन के खिलाफ सविनय अवज्ञा आंदोलनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। चंपारण सत्याग्रह की सफलता ने गांधीजी के इस विश्वास को और मजबूत किया कि हिंसा का सहारा लिए बिना निष्क्रिय प्रतिरोध से बदलाव लाया जा सकता है। इसने नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे भविष्य के जन आंदोलनों की नींव रखी।

इसके अलावा, इस घटना ने पूरे भारत के स्वतंत्रता संग्राम को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस आंदोलन से पहले, भारतीयों ने बड़े पैमाने पर ब्रिटिश शासन को अपरिहार्य मान लिया था और इसे सीधे चुनौती देने में संकोच कर रहे थे। हालाँकि, यह देखने के बाद कि एकता और अहिंसक तरीके कैसे बदलाव ला सकते हैं, कई भारतीयों ने साम्राज्यवादी वर्चस्व को स्वीकार करने पर सवाल उठाना शुरू कर दिया।

चंपारण सत्याग्रह की विरासत और वर्तमान भारत में इसकी प्रासंगिकता

चंपारण सत्याग्रह, जिसे 1917 के नील विद्रोह के रूप में भी जाना जाता है, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण घटना थी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में, इसने उनके सत्याग्रह आंदोलन की शुरुआत की और भारत के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय, चंपारण बिहार का एक कृषि क्षेत्र था, जहाँ ब्रिटिश जमींदारों द्वारा किसानों को खाद्य फसलों के बजाय नील उगाने के लिए मजबूर किया जाता था।

इससे किसानों का शोषण हुआ, जिन्हें अत्यधिक किराया देने और बिना किसी मजदूरी के काम करने के लिए मजबूर किया गया। किसानों को भेदभावपूर्ण कानूनों के अधीन भी रखा गया और उनके पास अपने उत्पीड़कों के खिलाफ कोई कानूनी सहारा नहीं था। इस अन्याय के जवाब में, महात्मा गांधी ने स्थानीय नेताओं राजेंद्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिन्हा और जे.बी. कृपलानी के सहयोग से एक अहिंसक विरोध या सत्याग्रह शुरू किया। उन्होंने किसानों को बेहतर व्यवहार और उचित मजदूरी की उनकी माँगों के पूरा होने तक नील के बागानों पर काम करने से मना करने के लिए प्रोत्साहित किया।

गांधी के सत्याग्रहियों को ब्रिटिश अधिकारियों से कठोर दमन का सामना करना पड़ा, लेकिन वे अपने शांतिपूर्ण विरोध में अडिग रहे। इस प्रतिरोध के दौरान, उन्होंने दमनकारी प्रथाओं के खिलाफ सबूत एकत्र किए और उन्हें सरकारी समितियों के समक्ष प्रस्तुत किया। जैसे–जैसे भारत भर में उनके आंदोलन के लिए जनता का समर्थन बढ़ता गया, इसने औपनिवेशिक अधिकारियों पर किसानों पर किए गए अन्याय को दूर करने का दबाव डाला। अंततः, दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों के बीच कई महीनों की बातचीत के बाद, "चंपारण कृषि अधिनियम" नामक एक समझौता हुआ, जिसमें किसानों को रियायतें दी गईं, साथ ही नील की जगह खाद्यान्न उगाने के उनके अधिकार को मान्यता दी गई।

चंपारण सत्याग्रह की सफलता ने न केवल उत्पीड़ित किसानों को राहत पहुंचाई, बल्कि औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति का भी प्रदर्शन किया। इसने पूरे भारत में इसी तरह के आंदोलनों को प्रेरित किया और लोगों को एक साझा लक्ष्य – ब्रिटिश शासन से मुक्ति की ओर प्रेरित किया।

आज, एक सदी से भी अधिक समय बाद, हम भारत के वर्तमान समाज में चंपारण सत्याग्रह की प्रतिध्वनियाँ देख सकते हैं। गांधी द्वारा अपनाए गए अहिंसक विरोध और सविनय अवज्ञा के सिद्धांत पूरे देश में सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों को प्रेरित करते हैं।

चंपारण में किसानों के मुद्दे और शिकायतें

चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसे महात्मा गांधी के भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के नेता बनने की यात्रा में एक प्रमुख मोड़ माना जाता है। यह सत्याग्रह बिहार के चंपारण जिले में 1917 से 1918 तक चला और किसानों के सामने आने वाले मुद्दों और शिकायतों के इर्द–गिर्द घूमता रहा।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान, चंपारण अपने प्रमुख नील बागानों के लिए जाना जाता था, जो यूरोपीय जमींदारों के स्वामित्व में थे। इन जमींदारों ने किसानों को बिना किसी मुआवजे के हर बीस बड़े हास (भूमि माप की एक इकाई) में से कम से कम तीन पर नील की खेती करने के लिए मजबूर किया। उनकी बाकी जमीन का इस्तेमाल उनके भरण–पोषण के लिए खाद्यान्न उगाने के लिए किया गया। इस रणनीति ने न केवल किसानों का शोषण किया, बल्कि उनकी आजीविका को भी प्रभावित किया क्योंकि वे खुद को और अपने परिवार को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन उगाने में असमर्थ थे।

चंपारण के किसानों की एक प्रमुख शिकायत यह थी कि वे शतिनकठियाश नामक एक दमनकारी व्यवस्था से बंधे हुए थे, जो भूमि–उपयोग और उत्पादन निर्णयों पर मालिकों को असीमित शक्ति प्रदान करती थी। यह व्यवस्था किसानों की कीमत पर जमींदारों का पक्ष लेती थी, जिनके पास अपने श्रम–गहन काम के लिए अल्प मजदूरी स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

किसानों के सामने एक और मुद्दा यह था कि उन्हें ब्रिटिश व्यापारियों द्वारा निर्धारित बाजार मूल्य से कम पर नील बेचने के लिए मजबूर किया जाता था, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें बहुत कम या कोई लाभ नहीं होता था। इसके अलावा, किसानों से उनकी भूमि के कुछ हिस्से या पूरी भूमि पर नील की खेती करने के लिए उच्च किराया वसूला जाता था, जिससे वे कर्ज के जाल में फंस जाते थे और इससे बचने का कोई रास्ता नहीं होता था। इसके अलावा, यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा ग्रामीणों पर लगाए गए कर अत्यधिक थे और उनके लिए गुजारा करना लगभग असंभव था। इन निर्णयों में किसानों की कोई भूमिका नहीं थी क्योंकि कर–संबंधी सभी मामले शोषक ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा संचालित अदालतों के माध्यम से निपटाए जाते थे।

अध्ययन की जाने वाली समस्या

चंपारण सत्याग्रह की ऐतिहासिक घटनाएँ, जिसे चंपारण आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यह आंदोलन महात्मा गांधी द्वारा 1917 में ब्रिटिश जमींदारों द्वारा गरीब किसानों पर लगाए गए नील की खेती की दमनकारी प्रणाली के खिलाफ लड़ने के लिए

शुरू किया गया था। समस्या केवल आर्थिक शोषण तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें सामाजिक और राजनीतिक असमानता के मुद्दे भी शामिल थे। इस प्रणाली के तहत, किसानों को अपनी खाद्य फसलों के बजाय नील की नकदी फसलों की खेती करने के लिए मजबूर किया जाता था। उन्हें कठोर कामकाजी परिस्थितियों के अधीन किया जाता था और उनके श्रम के लिए उन्हें बहुत कम मजदूरी मिलती थी, जबकि उनकी अधिकांश उपज जमींदारों द्वारा छीन ली जाती थी। इससे किसानों में व्यापक गरीबी और ऋणग्रस्तता फैल गई, जिससे उन्हें बहुत कष्ट हुआ। गांधी ने माना कि यह मुद्दा महज आर्थिक अन्याय से परे है और भारत में औपनिवेशिक शासन के खिलाफ एक बड़े संघर्ष का प्रतीक है। शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन आयोजित करके और अहिंसक प्रतिरोध की वकालत करके, उनका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रति जन चेतना जागृत करना और लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए प्रेरित करना था। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप, हजारों किसानों ने बड़े पैमाने पर सविनय अवज्ञा अभियानों में भाग लिया, अन्यायपूर्ण कानूनों की अवहेलना की और बहादुरी के साथ गिरफ्तारियों का सामना किया।

अध्ययन का औचित्य

चंपारण सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता संग्राम की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है, फिर भी इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और देश की स्वतंत्रता की लड़ाई पर इसके प्रभाव को अक्सर अनदेखा किया जाता रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य चंपारण सत्याग्रह और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन पर इसके प्रभावों के कारण राजनीतिक और सामाजिक माहौल की जांच करके भारतीय इतिहास के इस महत्वपूर्ण काल पर प्रकाश डालना है। सबसे पहले, चंपारण सत्याग्रह के ऐतिहासिक संदर्भ को समझना इसके महत्व को समझने के लिए आवश्यक है। यूरोपीय लोगों के आगमन से भारत की कृषि प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, जिसके कारण नील की खेती करने वाले किसानों के खिलाफ ब्रिटिश बागान मालिकों द्वारा शोषणकारी व्यवहार अपनाए गए। इसके परिणामस्वरूप किसानों में व्यापक गरीबी और अशांति फैल गई, जिन्हें जमींदारों द्वारा खाद्य फसलों के बजाय नील की खेती करने के लिए मजबूर किया गया। दूसरे, इस आंदोलन में एक नेता के रूप में महात्मा गांधी की भागीदारी इसके महत्व को और उजागर करती है। दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद यह न केवल उनका पहला राजनीतिक सत्याग्रह था, बल्कि यह अहिंसक प्रतिरोध के प्रति उनकी विचारधारा में एक महत्वपूर्ण मोड़ भी था। चंपारण सत्याग्रह के दौरान इस्तेमाल की गई उनकी रणनीति को बाद में भारत की स्वतंत्रता के लिए अन्य प्रमुख विरोध प्रदर्शनों के दौरान बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया।

शोध का उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य भारत के स्वतंत्रता आंदोलन पर चंपारण सत्याग्रह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और प्रभाव की व्यापक समझ प्रदान करना है। चंपारण सत्याग्रह को भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक माना जाता है, क्योंकि इसने ब्रिटिश शासन के खिलाफ महात्मा गांधी के अहिंसक प्रतिरोध की शुरुआत की थी।

इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं

- चम्पारण सत्याग्रह के लिए जिम्मेदार ऐतिहासिक संदर्भ और कारकों की जांच करना।
- चम्पारण सत्याग्रह के समय भारत के सामाजिक–राजनीतिक माहौल को समझना।
- चम्पारण सत्याग्रह आंदोलन शुरू करने में महात्मा गांधी की भूमिका का विश्लेषण करना।
- यह जांचना कि ब्रिटिश शासन और नीतियों ने चंपारण जिले में किसानों के जीवन को कैसे प्रभावित किया।
- गांधी के अहिंसक प्रतिरोध के दर्शन और सत्याग्रह आंदोलन को आकार देने में इसके महत्व का पता लगाना।
- चम्पारण में किसानों का शोषण करने के लिए ब्रिटिश जमींदारों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले विभिन्न तरीकों का अध्ययन करना।

परिकल्पना

चंपारण सत्याग्रह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह 1917 और 1918 के बीच बिहार के चंपारण जिले में हुआ था और इसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था। सत्याग्रह आंदोलन का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आज भी प्रासंगिक है। इसके महत्व को बेहतर ढंग से समझने के लिए, आइए विभिन्न शून्य परिकल्पना और वैकल्पिक परिकल्पना पर एक नज़र डालें जिनकी जाँच की जा सकती है।

H0: चंपारण सत्याग्रह ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाई।

H1: चंपारण सत्याग्रह ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनमत जुटाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भविष्य के अहिंसक विरोधों की नींव रखी।

शोध पद्धति

चंपारण सत्याग्रह, जिसे नील विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह अहिंसक किसान विद्रोह 1917 में बिहार के चंपारण जिले में हुआ था, जहाँ नील किसानों को खाद्य फसलों के बजाय अपने ब्रिटिश जमींदारों के लिए नील उगाने के लिए मजबूर किया गया था। इस महत्वपूर्ण आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर इसके प्रभाव को समझने के लिए, एक गहन शोध पद्धति को अपनाना होगा। सबसे पहले, महात्मा गांधी और राजेंद्र प्रसाद जैसे नेताओं के समाचार पत्र लेख, पत्र और भाषण जैसे प्राथमिक स्रोतों से परामर्श किया जाना चाहिए। ये सत्याग्रह के दौरान सामने आई घटनाओं का प्रत्यक्ष विवरण प्रदान करते हैं। भारतीय इतिहास के बारे में विद्वानों के लेख और पुस्तकों सहित माध्यमिक स्रोत उस समय चंपारण के सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ पर एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान कर सकते हैं। इन स्रोतों का विश्लेषण करके, कोई भी नील किसानों द्वारा सामना किए जाने वाले आर्थिक शोषण और इससे सामाजिक अशांति कैसे पैदा हुई, इस बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त, स्थानीय समुदायों पर इस विद्रोह के प्रभाव को समझने तथा समय के साथ इसे किस प्रकार याद रखा गया, यह समझने में फील्डवर्क महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

शोध प्रश्नकता

- महात्मा गांधी चंपारण सत्याग्रह में कैसे शामिल हुए?
- गांधीजी की भागीदारी का आंदोलन पर क्या प्रभाव पड़ा?
- इस समयावधि के दौरान चंपारण में किसानों की मुख्य मांगें क्या थीं?
- चंपारण सत्याग्रह के समय भारत में सामाजिक–राजनीतिक माहौल कैसा था?

- किन घटनाओं के कारण चंपारण सत्याग्रह शुरू हुआ और इसकी शुरुआत कैसे हुई?
- भारत में ब्रिटिश शासन ने चंपारण सत्याग्रह को जन्म देने वाली परिस्थितियों में कैसे योगदान दिया?
- गांधीजी के अहिंसक प्रतिरोध के दर्शन ने इस आंदोलन के दौरान उनके कार्यों को कैसे प्रभावित किया?

खोज

चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह 1917 और 1918 के बीच बिहार के चंपारण जिले में हुआ था और इसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था। सत्याग्रह ने न केवल नील की खेती करने वाले किसानों के शोषण को उजागर किया, बल्कि भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में एक महत्वपूर्ण मोड़ भी पेश किया।

यहाँ सात प्रमुख निष्कर्ष दिए गए हैं जो भारत के स्वतंत्रता आंदोलन पर चंपारण सत्याग्रह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और प्रभाव को उजागर करते हैंरू

इस अध्ययन के निम्नलिखित खोज हैं

- **नील की खेती करने वाले किसानों का शोषणः** चंपारण सत्याग्रह की शुरुआत का मुख्य मुद्दा चंपारण में ब्रिटिश जमींदारों द्वारा नील की जबरन खेती करना था। कृषि प्रणाली में शोषणकारी शर्तों के साथ कठोर अनुबंध शामिल थे, जिससे किसान गरीब और कर्ज में फंस गए। गांधी ने इसे अन्याय के रूप में देखा और शांतिपूर्ण प्रतिरोध के माध्यम से इसका समाधान करने की कोशिश की।
- **महात्मा गांधी की भूमिकाः** महात्मा गांधी ने सत्याग्रह के आयोजन और नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कई महीने नील की खेती करने वाले किसानों के बीच रहकर उनकी समस्याओं को समझा और उन्हें शांतिपूर्ण तरीके से अपने अधिकारों की मांग करने के लिए प्रेरित किया। उनकी भागीदारी ने न केवल राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया बल्कि अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांतों को भी स्थापित किया जो उनके नाम का पर्याय बन गया।
- **स्थानीय नेताओं के साथ सहयोगः** गांधी ने अकेले सत्याग्रह शुरू नहीं किया; उन्होंने राज कुमार शुक्ला जैसे स्थानीय नेताओं के साथ सहयोग किया, जो एक किसान थे और जिन्होंने स्वदेशी (आत्मनिर्भरता) पर उनके भाषणों को देखने के बाद उनसे मदद की अपील की थी। इस साझेदारी ने शहरी–शिक्षित नेताओं और ग्रामीण किसानों के बीच सांस्कृतिक अंतर को पाटने में मदद की और उपनिवेशवादियों के खिलाफ एकजुट मोर्चा सुनिश्चित किया।
- **अहिंसक विरोध का उपयोगः** गांधीवादी दर्शन से प्रेरित होकर, हजारों लोग चंपारण के विभिन्न स्थानों पर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन में एकत्रित हुए और ब्रिटिश जमींदारों को तब तक भुगतान करने से मना कर दिया जब तक कि वे उनकी शिकायतों का उचित समाधान नहीं करते। इस दृष्टिकोण को लोगों से भारी समर्थन मिला और अहिंसक प्रतिरोध की ताकत पर प्रकाश डाला।
- **ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा हस्तक्षेपः** व्यापक विरोध से भयभीत ब्रिटिश सरकार ने हिंसक बल के माध्यम से इसे दबाने का प्रयास किया। उन्होंने गांधी और अन्य नेताओं को गिरफ्तार किया, सार्वजनिक समारोहों पर प्रतिबंध लगा दिया और यहां तक कि शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोलीबारी भी की। हालाँकि, इससे लोगों का आक्रोश और बढ़ गया और उनके उद्देश्य की सही पुष्टि हुई।

सुझाव

चंपारण सत्याग्रह, जिसे चंपारण आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है, ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह महात्मा गांधी द्वारा 1917–18 के दौरान बिहार में दमनकारी नील बागान मालिकों के खिलाफ आयोजित एक सफल अहिंसक विरोध था। इस आंदोलन ने न केवल ग्रामीण भारत में महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाए, बल्कि भविष्य के स्वतंत्रता संग्रामों के लिए एक मॉडल के रूप में भी काम किया।

इस आंदोलन की सफलता के आधार पर, यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं जिन्हें किसी भी प्रकार के शांतिपूर्ण प्रतिरोध या विरोध पर लागू किया जा सकता हैः

इस अध्ययन के निम्नलिखित सुझाव हैं

- **लोगों के बीच एकताः** चंपारण सत्याग्रह में विभिन्न समुदायों और पृष्ठभूमि के लोगों को एक साझा उद्देश्य के लिए एक साथ आते देखा गया। किसी भी अन्याय या उत्पीड़न के खिलाफ़ खड़े होने के लिए एक मजबूत ताकत बनाने के लिए लोगों के बीच एकता बहुत ज़रूरी है।
- **अहिंसक प्रतिरोधः** गांधी की अहिंसक प्रतिरोध की विचारधारा ने इस आंदोलन की सफलता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने दिखाया कि शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन हिंसक विरोध प्रदर्शनों से ज़्यादा प्रभावी हो सकते हैं।
- **जागरूकता और शिक्षाः** चंपारण सत्याग्रह का एक प्राथमिक उद्देश्य किसानों को उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित करना और उनमें जागरूकता पैदा करना था और यह बताना था कि नील की खेती करने वाले किसानों द्वारा उनका किस तरह शोषण किया जा रहा है। लोगों को शिक्षित करना और उनमें जागरूकता पैदा करना उन्हें किसी भी उद्देश्य के लिए प्रेरित करने के लिए बहुत ज़रूरी है।
- **जन भागीदारीः** चंपारण सत्याग्रह में समाज के सभी वर्गों से व्यापक भागीदारी देखी गई, जिसमें महिलाएँ भी शामिल थीं, जिन्होंने उस समय लिंग के आधार पर भेदभाव का सामना करने के बावजूद विरोध प्रदर्शनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। यह दर्शाता है कि किसी भी आंदोलन की सफलता के लिए जन भागीदारी महत्वपूर्ण है, खासकर जब इसमें गहराई से जड़ जमाए हुए सामाजिक मानदंडों को चुनौती देना शामिल हो।
- **रणनीतिक योजनाः** आंदोलन को उसके क्रियान्वयन से पहले विशिष्ट उद्देश्यों और रणनीतियों के साथ सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध किया गया था, जैसे कि बहिष्कार और असहयोग कार्रवाई। रणनीतिक योजना लोगों की ऊर्जा को लक्ष्यहीन आंदोलन के बजाय सार्थक परिणाम प्राप्त करने की दिशा में लगाने में मदद करती है।
- **आत्मनिर्भरताः** आंदोलन के हिस्से के रूप में, गांधी ने लोगों को अपने भोजन और कपड़े उगाकर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे अंततः जीवन जीने का एक अधिक टिकाऊ तरीका सामने आया। आत्मनिर्भरता के इस विचार को दमनकारी प्रणालियों पर निर्भरता को कम करने के लिए किसी भी आंदोलन या विरोध पर लागू किया जा सकता है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, चंपारण सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने गांधी की अहिंसक प्रतिरोध रणनीति की शुरुआत की। इसने न केवल नील किसानों की दुर्दशा और ब्रिटिश जमींदारों द्वारा उनके शोषण की ओर ध्यान आकर्षित किया, बल्कि इसने समाज के सभी वर्गों के लोगों को एक साझा उद्देश्य के लिए लड़ने के लिए एकजुट किया। इस

विरोध के परिणामस्वरूप न केवल किसानों की स्थिति में सुधार हुआ, बल्कि इसने पूरे भारत में इसी तरह के आंदोलनों का मार्ग प्रशस्त किया, जिसके कारण अंततः भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता मिली। इसके अलावा, इस संघर्ष में गांधी की भागीदारी ने उन्हें विभिन्न क्षेत्रों के भारतीयों से मान्यता और समर्थन प्राप्त करने में मदद की और उन्हें भारत के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चंपारण सत्याग्रह को हमेशा एकता, लचीलापन और अन्याय के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में याद किया जाएगा – ऐसे मूल्य जो सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों के लिए चल रहे संघर्षों में पीढ़ियों को प्रेरित करते रहेंगे।

अध्ययन की सीमाएँ

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन पर चंपारण सत्याग्रह के महत्वपूर्ण प्रभाव के बावजूद, इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करने में कुछ सीमाएँ हैं। एक प्रमुख सीमा उस अवधि के विस्तृत अभिलेखों और दस्तावेज़ीकरण की कमी है। चंपारण क्षेत्र काफी हद तक ग्रामीण और अशिक्षित था, जिससे इतिहासकारों के लिए स्थानीय आबादी से प्रत्यक्ष विवरण एकत्र करना मुश्किल हो गया। इसके अलावा, चंपारण पर उपलब्ध अधिकांश साहित्य मुख्य रूप से गांधी की भूमिका और योगदान पर केंद्रित है, विरोध प्रदर्शन आयोजित करने और उसे अंजाम देने में स्थानीय नेताओं और किसानों की भागीदारी जैसे अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं की उपेक्षा करता है। इसके अतिरिक्त, औपनिवेशिक शासन के दौरान राजनीतिक प्रभावों के कारण, चंपारण सत्याग्रह के बारे में अधिकांश जानकारी को सेंसर या विकृत कर दिया गया है। इससे शोधकर्ताओं के लिए इस ऐतिहासिक आंदोलन के दौरान हुई घटनाओं को सटीक रूप से चित्रित करना एक चुनौती बन जाता है। एक और सीमा यह है कि चंपारण सत्याग्रह जैसी केवल एक विशिष्ट घटना का अध्ययन करने से भारत के स्वतंत्रता संग्राम की समग्र समझ नहीं मिल सकती है। भारत के विभिन्न हिस्सों में एक साथ कई अन्य आंदोलन हो रहे थे जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके अलावा, समय के साथ बदलते दृष्टिकोण और व्याख्याओं के साथ, चंपारण सत्याग्रह से जुड़े कुछ तथ्यों और विवरणों के बारे में बहस की हमेशा गुंजाइश रहती है।

अग्रगामी अनुसंधान

चंपारण सत्याग्रह, जिसे नील विद्रोह के रूप में भी जाना जाता है, ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह 1917 में बिहार के चंपारण जिले में हुआ था, जहाँ यूरोपीय नील के बागान मालिकों ने भारतीय किसानों को खाद्य फसलों के बजाय अपनी ज़मीन के एक हिस्से पर नील की खेती करने के लिए मजबूर किया था। यह अनैतिक प्रथा दशकों से चली आ रही थी और इससे स्थानीय किसानों में आक्रोश पैदा हुआ, जिनका शोषण किया गया और उन्हें दरिद्र बना दिया गया। महात्मा गांधी का आगमन हुआ, जो उस समय दक्षिण अफ्रीका से लौटे थे और भेदभावपूर्ण नीतियों के खिलाफ अपने अहिंसक विरोध से पहले से ही चर्चा में थे। उन्होंने राज कुमार शुक्ला के निमंत्रण पर चंपारण का दौरा किया, जो एक प्रभावशाली किसान नेता थे और जिन्होंने किसानों के सामने आने वाले इन मुद्दों को संबोधित करने में गांधीजी की मदद मांगी थी। इसके बाद एक बड़े पैमाने पर आंदोलन हुआ जिसने विभिन्न जातियों और धर्मों के किसानों को एक उद्देश्य के तहत एक साथ लाया – उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई। गांधीजी ने इन किसानों की दुर्दशा को समझने में खुद को सक्रिय रूप से शामिल किया और उनकी शिकायतों को सुनने के लिए उनके साथ बैठकें आयोजित कीं। उन्होंने उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा जारी गैरकानूनी आदेशों का विरोध करने के लिए प्रोत्साहित किया और विभिन्न तरीकों जैसे बहिष्कार, शांतिपूर्ण प्रदर्शन, याचिका आदि के माध्यम से उनका समर्थन किया।

सन्दर्भ सूची

1. नादरी, जी.ए., 2016. भारत में नील की राजनीतिक अर्थव्यवस्था, 1580–1930: एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य। ब्रिल।
2. कुमार, पी., 2012. औपनिवेशिक भारत में नील की खेती और विज्ञान। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। मित्तल, एस.के. और दत्त, के., 1976।
3. घिल्डियाल, एस., 2010. नैतिक अर्थव्यवस्था और नील आंदोलन। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, पृ. 67–72।
4. रॉय, टी., 2011. औपनिवेशिक भारत में नील और कानून। आर्थिक इतिहास समीक्षा, 64(एस1), पृ. 60–75।
5. वेबर टी. (2009)। नमक मार्च परः महात्मा गांधी के दांडी मार्च का इतिहासलेखन। रूपा प्रकाशन
6. गांधी एम.के. (1927)। एक आत्मकथा या सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी। नवजीवन पब्लिशिंग हाउस। 7. कृपलानी जे. बी. (1970)। गांधीः उनका जीवन और विचार। प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
7. नायर के. (1994). नेतृत्व का उच्चतर मानकः गांधी के जीवन से सबक। बेरेट–कोहलर। 2. पाउचेपदास जे. (1999)। चंपारण और गांधीरू बागान मालिक, किसान और गांधीवादी राजनीति। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
8. रिचड्र्स जी. (1982)। गांधी का दर्शनः उनके मूल विचारों का अध्ययन। कर्जन प्रेस। 4. राज कुमार सुकुल और चंपारण में किसान विद्रोह। सोशल साइंटिस्ट, पृ. 25–36।
9. मुंदरगी, टी., 1990. कांग्रेस और जमींदारः बिहार में सहयोग और परामर्श, 1915–36। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, पृ. 1217–1222। 6. एशियाटिकस। (1912)। भारत में नील उद्योग का उत्थान और पतन। रॉयल इकोनॉमिक सोसाइटी, 22(86), 237–247।
10. बेडेन–पॉवेल, बी.एच. (1896)। बंगाल में जमींदारी सम्पदा की उत्पत्ति। त्रैमासिक अर्थशास्त्र पत्रिका, 11(1), 36–69।
11. बख्शी, एस.आर. (1988)। गांधी और चंपारण सत्याग्रह। नई दिल्ली, आकाशदीप पब्लिशिंग हाउस।
12. डी.एन. (1989)। स्वामी सहजानंद और किसान सभा। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 24(13), 661–662।
13. दत्ता, के.के. (1957)। बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास (खंड 1)। पटना, बिहार सरकार।
14. कुमार, के. (1983)। गांधी और उनके कार्यक्रम के बारे में किसानों की धारणा, अवध, 1920– 1922. सोशल साइंटिस्ट, 11(2), 16–30.